बाल भारती

१

दो शब्द

इसकी पुस्तक की रचना पंजाब शिक्षा विभाग के नये पाठ्यक्रम और सीमित शब्दावली के आधार पर की गई है।

नए शब्द पुराने शब्दों के साथ-साथ आते गए हैं। इसके कारण बालक के मस्तिष्क पर किसी प्रकार का बोझ नहीं पड़ने दिया गया है।

कविताओं में इस बात का ध्यान रखा गया है कि वे सरल, गाए जाने योग्य और शिक्षाप्रद हों।

'आज के बालक, कल देश की बागडोर संभालेंगे', इस दृष्टि से उनकी अवस्था और रुचि को ध्यान में रखते हुए, उनमें अच्छी आदतों की नींव रखने का प्रयत्न किया गया है।

सारी पाठ्य-सामग्री सरल, रोचक, शिक्षापूर्ण और रंगीन चित्रों से सुसज्जित है।

इस पुस्तक की रूपरेखा बनाते समय हमारे सामने

इसी कक्षा के 'समाज-परिचय' और 'साधारण-विज्ञान' का मौखिक पाठ्यक्रम भी रहा है। हमने यथासम्भव उससे तालमेल बनाए रखने का प्रयत्न किया है।

हमें आशा है कि बच्चे इसे चाव से पढ़ेंगे।

—सम्पादक

पाठ-सूची

क्रम	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या
एक	हमारा झंडा	७
दो	दिन	८
तीन	हम पढ़ते हैं	९
चार	खेल	१०
पाँच	चित्र देखो और पढ़ो	११
छः	सफाई	१२
सात	तीन साथी	१५
आठ	आओ खेलें, आओ गाएँ	१६
नौ	मेरा घोड़ा	१७
दस	सवेरे के काम	१९
ग्यारह	पाठशाला	२०
बारह	घर में	२१
तेरह	घोड़े की दौड़	२३

चौदह	आ गया खिलौने वाला	२६
पन्द्रह	काम की सात बातें	२७
सोलह	गांधीजी	२८
सत्रह	सफाई	३०
अठारह	पढ़ो और लिखो	३२
उन्नीस	चींटी	३३
बीस	सच्चा बालक	३४
इक्कीस	हमारा झंडा	३७
बाईस	सवेरा	३९
तेईस	साइकिल	४०
चौबीस	कौन जीता	४३
पच्चीस	कुकड़ूं कूं	४७
छब्बीस	जन्म दिन	४९
सत्ताईस	आओ खेलें	५१
अट्ठाईस	श्रवणकुमार	५२
उन्तीस	मूर्ख बकरे	५५
तीस	हमारा देश	५६

पाठ एक

हमारा झंडा

गीता आओ विमला आओ,
इस झंडे को शीश झुकाओ।
है यह तीन रंगों में रंगा,
कहते इसको सभी तिरंगा।
हम सबको यह लगता प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा॥

पाठ दो

दिन

विमला दिन निकल आया।
चारपाई से उठ।
हाथ-मुँह धो। दातुन कर।
नहा कर आ। साफ कपड़े पहिन।
बालों में तेल लगा।

बालों में कंघी कर।

अब किताब पढ़।
मन लगा कर पढ़।
कलम दवात किताब उठा।

चल उठ हाथ धो कर आ।
रोटी खा। समय पर पाठशाला जा।

पाठ तीन

हम पढ़ते हैं

यह हमारी पाठशाला है ।

हम समय पर
पाठशाला आते हैं ।
फिर किताब पढ़ते हैं ।
गिनती सीखते हैं । कलम से लिखते हैं ।

मैदान में खेलते हैं ।
हम सब मिल कर खेलते हैं ।
हम सब मिल कर पढ़ते हैं ।

हम कभी नहीं लड़ते हैं ।
हम भाई-बहिन कहाते हैं ।
पढ़-लिख कर घर आते हैं ।

पाठ चार

खेल

मेरा नाम विमला है।
अमर मेरा भाई है।
मैं गुड़िया से खेलती हूँ।

अमर गेंद से खेलता है।
गुड़िया माताजी ने बनाई है।
गेंद बाजार से आई है।

पिताजी आएँगे। फल लाएँगे।
हम खूब फल खाएँगे।
पिताजी मुझे रोज कहानी सुनाते हैं।
मुझे चिड़िया की कहानी याद है।
कल परियों की कहानी सुनी थी।
आज नई कहानी सुनेंगे।

पाठ पाँच

चित्र देखो और पढ़ो

मैं से खेलती हूँ।

हम से लिखते हैं।

अमर पढ़ता है।

यह लाल है।

यह काली है।

मेरा दौड़ता है।

पाठ छः

सफाई

अमर खेल कर आया।

उसके हाथ मैले थे।

अमर ने साबुन उठाया।

नल पर जाकर हाथ धोए।

माता ने कहा—
अमर आओ रोटी खाओ।
अमर रसोई में जा बैठा।
माता ने थाली परोस दी।
थाली में रोटियाँ हैं।
अमर ने खाना खाया।

फिर हाथ-मुँह धोए।
अमर अब पढ़ेगा।

पाठ सात

तीन साथी

एक हिरन था।
एक चूहा था।
एक कौआ था।
तीनों साथी थे।
एक बार हिरन जाल में फँस गया।

कौए ने उसे देख लिया।
कौए ने चूहे को बताया।
चूहा दौड़ा-दौड़ा आया।
चूहे ने जाल काट दिया।
हिरन जाल से छूट गया।
कौआ उड़ गया।
चूहा भाग गया।

पाठ आठ

आओ खेलें, आओ गाएँ

आओ खेलें ।
आओ गाएँ ।

छक छक छक छक
रेल चलाएँ ।

ढम ढम ढम ढम
ढोल बजाएँ ।
मिल कर खेलें
मिल कर गाएँ ।
नाचें कूदें
खुशी मनाएँ ।

पाठ नौ

मेरा घोड़ा

खाता घास न पीता पानी ।
इसकी चाल बड़ी मनमानी ॥
थकता नहीं सवारी से यह ।
ना ही डरता चाबुक से यह ॥
लात कभी यह नहीं मारता ।
दाँत लगाना इसे न आता ॥

दिन भर चल सूरज थक जाता।
चन्दा मामा भी थक जाता ॥
बैठे बैठे मैं थक जाता ।
मेरा घोड़ा कभी न थकता ॥

पाठ दस

सवेरे के काम

मैं दिन निकलने से पहिले उठता हूँ।
उठ कर हाथ-मुँह धोता हूँ।
फिर टहलने जाता हूँ।
मैं रोज दातुन करता हूँ।
मैं रोज कसरत करता हूँ।
साबुन लगा कर नहाता हूँ।

मैं साफ कपड़े पहनता हूँ।
बालों में तेल लगाता हूँ।
फिर कंघी करता हूँ।

उसके बाद दूध पीता हूँ।
दूध पीकर अपना पाठ याद करता हूँ।

पाठ ग्यारह

पाठशाला

मैं समय पर पाठशाला पहुँच जाता हूँ।
गुरुजी को हाथ जोड़ता हूँ।
फिर हम सब मिल कर गीत गाते हैं।
अपने-अपने कमरों में जा कर बैठते हैं।

मैं मन लगा कर पढ़ता हूँ।
साफ-साफ लिखता हूँ।
हाथ काले नहीं करता।
मैं कभी शोर नहीं मचाता।
मैं अपने साथियों से कभी नहीं लड़ता।

मैं इधर-उधर कभी कूड़ा नहीं फैलाता।
गुरुजी का कहना मानता हूँ।
पढ़ने के समय पढ़ता हूँ।
खेलने के समय खेलता हूँ।

पाठ बारह

घर में

एक दिन माताजी ने विमला और विजय को समझाया।

उन्होंने कहा—

घर को साफ रखो।

इधर-उधर कूड़ा मत फैलाओ।

चीजें अपनी-अपनी जगह रखो।

किताबें किताबों की जगह रखो।

कपड़े कपड़ों की जगह रखो।

पाठ तेरह

घोड़े की दौड़

एक घोड़ा था। वह कोई काम नहीं करता था। वह दिन भर इधर-उधर दौड़ता रहता था। वह समझता था कि मुझसे तेज कोई नहीं दौड़ सकता।

एक दिन उसे लोमड़ी मिली। उसने लोमड़ी से कहा—लोमड़ी बहिन! आओ मेरे साथ दौड़ लगाओ। देखें, कौन तेज दौड़ता है।

कहा लोमड़ी ने घोड़े से
मैं छोटी तुम बहुत बड़े
देख लगाते दौड़ हमें, सब
लोग हँसेंगे खड़े-खड़े !

घोड़े भाई ! तुम किसी और के पास जाओ।

घोड़े को हिरन मिला। उसने हिरन से कहा—हिरन भाई ! आओ दौड़ लगाएँ। देखें कौन तेज दौड़ता है।

हिरन ने कहा—ठीक बात है। लेकिन यह बताओ हार-जीत का फैसला कौन करेगा ?

घोड़े ने कहा—लोमड़ी हार-जीत का फैसला करेगी।

लोमड़ी ने कहा—एक, दो, तीन !

घोड़ा और हिरन दौड़ने लगे। दोनों एक दूसरे से आगे निकलना चाहते थे। कभी घोड़ा हिरन से आगे निकल जाता। कभी हिरन घोड़े से आगे निकल जाता। जीत हिरन की हुई। वह घोड़े से आगे निकल गया।

लोमड़ी ने फैसला सुनाया—हिरन जीता, घोड़ा हारा।

घोड़े को हार जाने का बड़ा दुःख हुआ। लोमड़ी ने घोड़े को समझाया। इसमें दुखी होने की कोई बात नहीं है। खेल में हार-जीत का दुःख कैसा ? आज हिरन जीता है। कल तुम भी जीत सकते हो।

पाठ चौदह

आ गया खिलौने वाला

गली गली आवाज लगाता ।
बीच बीच में बिगुल बजाता ॥
चीजें देता, पैसे लेता ।
वह आ गया खिलौने वाला ॥

एक आने में ऐनक देता ।
हाथ घड़ी दो आने में ॥
दो पैसे में बिगुल बेचता ।
आता मजा बजाने में ॥

एक आने की ऐनक ले कर ।
दो आने की हाथ घड़ी ॥
गली गली मैं फिरूँ घूमता ।
देखो मेरी शान बड़ी ॥

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो ।
२. खिलौने वाले के पास कौन-कौनसे खिलौने हैं ? नाम बताओ ।

पाठ पन्द्रह

काम की बातें

१. किसी की चीज बिना पूछे मत उठाओ।

२. अच्छे लड़कों का साथ करो। अच्छे बनो।

३. कोई भूल हो जाए तो उसे छिपाओ मत।

४. मीठी बोली बोलो। सच बोलो। कम बोलो।

५. ठीक समय पर उठो। ठीक समय पर पढ़ो। ठीक समय पर खाओ। ठीक समय पर पाठशाला जाओ। ठीक समय पर खेलो।

६. बड़ों का आदर करो। उनका कहा मानो। वे तुम्हारे भले की बात कहते हैं।

पाठ सोलह

गांधी जी

ये गांधी जी हैं।

गांधी जी सच बोलते थे।

अपना काम अपने हाथ से करते थे।

गांधी जी चरखा कातते थे।

वे खद्दर की धोती पहनते थे।

सवेरे और शाम प्रार्थना करते थे।

वे बच्चों को बहुत प्यार करते थे।

बच्चे गांधी जी को बापू कहते थे।

बड़े भी उन्हें बापू कहते थे।

सभी लोग उन्हें बापू कहते थे।

बापू बहुत अच्छे थे।

पाठ सत्रह

सफाई

सफाई रखने से बीमारी नहीं होती। मन प्रसन्न रहता है। जो बच्चे साफ-सुथरे रहते हैं, लोग उन्हें प्यार करते हैं। गन्दे बच्चों को तो कोई पास भी नहीं बैठने देता।

सफाई तीन तरह की होती है—

१. शरीर की सफाई; २. कपड़ों की सफाई; ३. आस-पास की जगह की सफाई।

शरीर की सफाई : प्रतिदिन दातुन करने और नहाने से शरीर साफ रहता है। सर्दी-जुकाम होने पर नाक को साफ रखना, बालों में कंघी करना भी जरूरी है।

कपड़ों की सफाई : पहनने के कपड़ों को भी साफ रखना चाहिये। अपना बस्ता, रोटी

बांधने का कपड़ा और रूमाल भी साफ होना चाहिये ।

आस-पास की जगह की सफाई : आस-पास की जगह को भी साफ रखना चाहिये। घर और आंगन में इधर-उधर कूड़ा नहीं फैलाना चाहिये । पाठशाला में अपने पढ़ने के कमरे को भी साफ रखना चाहिये । इसी तरह पाठ-शाला के आंगन और खेल के मैदान को भी साफ रखना चाहिये । इसी तरह गली-मुहल्ले की सफाई का भी ध्यान रखना चाहिये ।

*

पाठ अठारह

पढ़ो और लिखो

पक्का

मक्खी बच्चा

ग्वाला मच्छर

कुत्ता इंजन

पत्ता तसवीर

कद्दू बन्दर

काला शब्द

कुर्सी

पाठ उन्नीस

इक चींटी जब बिल पर आई,
दाना पड़ा उसे दिखलाई।
बार-बार थी जोर लगाती,
लेकिन खींच उसे ना पाती।

चींटी भागी बिल में आई,
सखियों से सब बात बताई।
जोर लगाया सबने आ कर,
दाना तब ले गईं उठा कर।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो।
२. इस कविता से तुम्हें क्या सीख मिलती है ?

पाठ बीसं

सच्चा बालक

विजय गेंद से खेल रहा था। घर में शीशा रखा था। गेंद शीशे से जा लगी। शीशा गिर पड़ा। गिर कर टूट गया। विजय ने खेलना बन्द कर दिया।

किसी ने शीशा गिरते नहीं देखा था। किसी को पता नहीं लगा कि शीशा किसने तोड़ा है।

माँ ने टूटा हुआ शीशा देखा। माँ ने विमला को आवाज दी। विमला गेंद से खेल रही थी। वह माँ की आवाज सुन कर आ गई। गेंद विमला के हाथ में थी।

माँ ने पूछा—विमला, यह शीशा किसने तोड़ा है ?

विमला ने कहा—पता नहीं किसने तोड़ा। मैं तो बाहर गेंद से खेल रही थी।

माँ ने कहा—सच-सच बताओ। तुम्हारे हाथ में गेंद है। खेलते-खेलते गेंद शीशे में जा लगी होगी।

इसी समय विजय भी बाहर से आ गया। उसने माँ से कहा—माँ, शीशा विमला से नहीं, मुझसे टूटा है। मैं खेल रहा था। गेंद शीशे से जा लगी। शीशा गिर पड़ा और टूट गया।

माँ ने कहा—बेटा, तुमने सच-सच बता दिया। मैं सोच रही थी कि विमला ने तोड़ा होगा। सच बोलना बड़ी अच्छी बात है।

माँ ने विजय को गोद में उठा लिया और प्यार किया।

अभ्यास

१. शीशा कैसे टूटा ?

२. माँ ने विजय को क्यों प्यार किया ?

३. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और लिखो—

सच्चा, तुम्हें, प्यार अच्छी।

पाठ इक्कीस

हमारा झंडा

अध्यापक—बच्चो ! इस झंडे को देखो। यह हमारे देश का झंडा है। अपने देश का झंडा हमें बहुत प्यारा है। तुम्हें यह अच्छा लगता है न ?

सभी बच्चे—जी हाँ, यह हमें बहुत अच्छा लगता है।

अध्यापक—विजय, तुम बताओ, इसमें कितने रंग हैं ?

विजय—इसमें तीन रंग हैं।

अध्यापक—अजय, बताओ, तीन रंग कौन-कौनसे हैं ?

अजय—केसरिया, सफेद और हरा।

अध्यापक—विमला, बताओ, कौन-कौनसा रंग कहाँ है ?

विमला—सबसे ऊपर केसरिया रंग है। बीच में सफेद और सबसे नीचे हरा।

अध्यापक—विजय, बताओ, झंडे के सफेद भाग में क्या है ?

विजय—सफेद भाग में नीले रंग का चक्र बना हुआ है।

अध्यापक—ठीक है। इसे 'अशोक चक्र' कहते हैं। हमें अपने झंडे से प्यार करना चाहिए।

अभ्यास

१. हमारे झंडे में कितने रंग हैं और कौनसा रंग कहाँ है ?

२. झंडे में अशोक चक्र कहाँ बना हुआ है ?

३. झंडे का चित्र बनाओ।

पाठ बाईस

सवेरा

पूरब में निकला है सूरज,
नया सवेरा आया।
जुटे काम पर लोग सभी,
सब तरफ उजाला छाया।
बच्चे अपना बस्ता लेकर,
शाला को हैं जाते।
अपना-अपना काम सभी,
करने झटपट जुट जाते।

अभ्यास

१. इस कविता को याद करो।
२. सूरज की तसवीर बनाओ।

पाठ तेईस

साइकिल

विजय और विमला के पास तीन पहियों की साइकिल है।

एक दिन दोनों लड़ पड़े।

विजय ने कहा—विमला, तुम पीछे बैठो। मैं साइकिल चलाऊँगा।

विमला ने कहा—मैं पीछे क्यों बैठूँ? तुम पीछे बैठो। मैं भी चलाना जानती हूँ।

मुझसे तुम छोटी हो। तुम्हीं पीछे बैठो—विजय ने कहा।

विमला बोली—छोटी हूँ तो क्या हुआ! मैं साइकिल चला सकती हूँ।

दोनों लड़ने लगे।

माँ कुछ काम कर रही थी। माँ ने दोनों को लड़ते देखा। बाहर आई। उसने साइकिल उठा कर ऊँची जगह पर रख दी।

माँ ने कहा—तुम आपस में लड़ते हो। अब साइकिल किसी को न मिलेगी। विजय को भी नहीं। विमला को भी नहीं।

विमला ने सोचा—मैं विजय से न लड़ती तो माँ साइकिल न उठाती।

विजय ने सोचा—मैं विमला को साइकिल चलाने देता तो माँ साइकिल न उठाती।

दोनों को अपनी भूल समझ में आ गई। दोनों माँ के पास गए। कहने लगे—माताजी, अब हम कभी नहीं लड़ेंगे। दोनों साइकिल चलाएँगे।

माँ ने साइकिल उतार कर दे दी। विजय और विमला दोनों साइकिल चलाने लगे। फिर वे कभी नहीं लड़े।

अभ्यास

१. माँ ने साइकिल उठा कर क्यों रख दी ?
२. माँ ने साइकिल कैसे दी ?
३. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो और लिखो—
तुम्हीं, शब्द, अभ्यास।

पाठ चौबीस

कौन जीता

कछुआ—खरगोश भाई, चलो मेला देखने चलें।

खरगोश—मेरा तुम्हारा क्या साथ ?

कछुआ—क्यों, मेरा तुम्हारा साथ क्यों नहीं हो सकता ?

खरगोश—मैं बहुत तेज दौड़ता हूँ। तुम बहुत धीमे चलते हो। फिर साथ कैसे हो सकता है ?

कछुआ—अच्छा यह बात है! शर्त लगाओ, मेले में कौन जल्दी पहुँचता है।

खरगोश—शर्त लगी।

[दोनों चल पड़ते हैं]

खरगोश—[कुछ देर बाद पीछे रुक कर] पता नहीं, कछुआ कहाँ रह गया। वह दौड़ में मुझसे नहीं जीत सकता। कभी नहीं जीत सकता।

[फिर दौड़ता है]

खरगोश—[पीछे देख कर] मैं बहुत आगे आ गया हूँ। कछुआ बहुत पीछे है। थोड़ी देर यहाँ आराम कर लूँ। फिर उठ कर दौड़ लगा लूँगा। बस मेले में पहुँच जाऊँगा।

[आराम करते-करते सो जाता है]

कछुआ—[सोया हुआ देख कर] खरगोश सो गया है। मैं जब तक मेले में नहीं पहुँच जाऊँगा, आराम नहीं करूँगा। [चलता रहता है]

खरगोश—

[जाग कर]

अरे खूब नींद

आई। कछुए का तो अभी तक पता नहीं है। मगर अब मुझे दौड़ना चाहिए। [दौड़ता है]

[कछुआ मेले में पहुँच चुका है। बाद में खरगोश पहुँचता है]

कछुआ—आओ खरगोश भाई। कहाँ रह गए थे?

खरगोश—मैं रास्ते में सो गया था।

कछुआ—अरे भाई, जीतने के लिए तो लगातार चलना पड़ता है।

खरगोश—ठीक कहते हो। तुम जीते मैं हारा। अब मैं कभी ऐसी भूल नहीं करूँगा।

अभ्यास

१. इस पाठ से तुम्हें क्या सीख मिलती है ?

२. एक लड़का कछुआ बने और दूसरा खरगोश। फिर इस नाटक को मैदान में खेलो।

३. नीचे लिखे शब्दों को पढ़ो--

मेरा, तुम्हारा, क्यों, शर्त, जल्दी, रास्ते।

पाठ पच्चीस

कुकड़ूँ कूँ

बड़े सवेरे मुर्गा कहता कुकड़ूँ कूँ !
जागो-जागो प्यारे बच्चो कुकड़ूँ कूँ !
जल्दी सोकर जल्दी जागो कुकड़ूँ कूँ !
काम सुबह के जल्दी कर लो कुकड़ूँ कूँ !

जो बच्चे जल्दी उठ जाते कुकड़ूँ कूँ !
वे बच्चे अच्छे कहलाते कुकड़ूँ कूँ !

पाठ छब्बीस

जन्म दिन

आज अशोक का जन्म दिन है। अशोक

बड़े सवेरे उठा। उसने माता-पिता को हाथ जोड़-कर नमस्ते कहा। फिर उसने नहा-धोकर नए

कपड़े पहने ।

आज अशोक के घर कई लोग आएंगे। उनमें उसके सम्बन्धी होंगे। कई पाठशाला के साथी होंगे। मुहल्ले के साथी होंगे।

सबको चाय और मिठाई दी जाएगी।

अशोक के सम्बन्धी, अशोक के लिए अच्छी-अच्छी चीजें लाएंगे। तस्वीरों वाली किताबें, चाबी वाली मोटर और खिलौने। वह कुछ खिलौने अपनी छोटी बहन को देगा।

अशोक ने सब आने वालों को हाथ जोड़कर नमस्ते कहा। बड़ों ने उसे आशीश दिया— जुग-जुग जियो। अच्छे बेटे बनो। बड़े-बड़े काम करो। देश का नाम करो।

पाठ सत्ताईस

आओ खेलें

झलमल झलमल तारे चमकें,
चन्दा चमके चम चम चम।

आओ, आओ, खेलें मिलजुल,
आज चाँदनी में हम।

पाठ अट्ठाईस

श्रवणकुमार

आज हम तुम्हें एक अच्छे लड़के की कहानी सुनाएंगे। वह लड़का था श्रवणकुमार। वह अपने माता-पिता की बहुत सेवा करता था। उनका कहना मानता था।

श्रवणकुमार के माता-पिता अंधे थे। इसलिए सारा काम-काज उसे ही करना पड़ता था।

एक बार उसके माता-पिता ने कहा—बेटा श्रवण! हम तीर्थ-यात्रा करना चाहते हैं। पर हम अन्धे हैं। तीर्थ-यात्रा करें कैसे?

श्रवणकुमार ने कहा—आप चिन्ता न करें। मैं आपको तीर्थ-यात्रा करवाऊँगा। उसने एक बहंगी बनवाई। बहंगी के एक पलड़े में माता को और दूसरे में पिता को बिठाया। फिर बहंगी को कन्धे पर उठाकर तीर्थ-यात्रा के लिए चल

पड़ा ।

तीर्थों में घूमते-घूमते वह एक दिन एक जंगल में पहुँचा । शाम हो गई थी । श्रवण के पिता को बहुत प्यास लगी थी । पिता ने कहा—

बेटा ! मुझे बड़ी प्यास लगी है । देखो, कहीं आस-पास पानी हो तो लाओ ।

श्रवण बहंगी को एक ओर रख कर, पानी लेने चला । अयोध्या के राजा दशरथ जंगल में

शिकार करने निकले हुए थे। श्रवण पानी भरने के लिए झुका। दूर खड़े राजा दशरथ ने समझा, कोई जंगली पशु पानी पी रहा है। उन्होंने उसको निशाना बनाकर तीर चला दिया। वह तीर श्रवणकुमार को लगा। तीर लगने से श्रवण-कुमार की चीख निकल गई। वह गिर पड़ा और दर्द से कराहने लगा। राजा दशरथ ने जब पास जाकर देखा तो बहुत दुखी हुए।

श्रवणकुमार ने राजा दशरथ से कहा—यह पानी का लोटा मेरे अन्धे माता-पिता के पास पहुँचा देना। वे प्यासे हैं। मेरी राह देख रहे होंगे। वे उस तरफ एक वृक्ष के नीचे बैठे हैं। यह कहते-कहते श्रवणकुमार के प्राण निकल गए।

राजा दशरथ पानी लेकर श्रवणकुमार के अन्धे माता-पिता के पास पहुँचा। राजा ने उन्हें सारी बात बता दी। श्रवणकुमार के माता-पिता अपने पुत्र के मरने के दुःख से मर गए।

पाठ उन्तीस

मूर्ख बकरे

कहीं एक पुल पर दो बकरे
गुस्से में आकर टकराए।

लड़ते-लड़ते दोनों बुद्धू,
सिर के बल जल बीच समाए॥

पाठ तीस

हमारा देश

हमारे देश का नाम भारत है । भारत बहुत

बड़ा देश है । भारत बहुत अच्छा देश है ।

हमारे देश में करोड़ों लोग रहते हैं। सभी कुछ न कुछ काम करते हैं। कोई खेती-बाड़ी का काम करता है। कोई दुकान में काम करता है। कोई कारखाने में काम करता है। कोई डाक्टर है। कोई पुलिस का सिपाही है। कोई बच्चों को पढ़ाता है। और भी कई तरह के काम हैं।

सभी काम अच्छे हैं। काम करने से ही आदमी बड़ा बनता है। देश बड़ा बनता है। अच्छा काम करने वालों का सभी आदर करते हैं।

अच्छे लड़के मन लगाकर काम करते हैं। काम चाहे पाठशाला का हो, चाहे घर का, काम से घबराना नहीं चाहिये।

तुम्हें कोई काम दिया जाए तो उसे अच्छी तरह करो। मन लगा कर करो। काम को अधूरा मत छोड़ो।

अच्छा काम करने वाले बच्चों से सभी

प्यार करते हैं। सभी उनकी बड़ाई करते हैं। जो बड़े-बड़े काम करते हैं, वे बड़े आदमी बनते हैं। तुम भी अच्छे-अच्छे काम करो। बड़े बनो। देश का नाम ऊँचा करो। अपने माता-पिता का मान बढ़ाओ। अपने गाँव और शहर का नाम ऊँचा करो।

★